IJAER/May-June- 2024/Volume-13/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

आधुनिक भारतीय कला में कला विद्यालयों का उद्भव व विकास

डॉ सूरज पाल साहू
एसोसिएट प्रोफेसर, ललित कला विभाग बरेली कॉलेज, बरेली
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली

भारतीय आधुनिक एवं समकालीन कला का विकास यूरोप के समसामयिक कला आंदोलन के विकास से गहरा संबंध रहा है। यूरोपीय कला प्रभाव के कारण ही भारत में 17वीं शताब्दी से ही यथार्थवादी शैली दृष्टि भ्रम, परिप्रेक्ष्य छाया–प्रकाश चित्रण पद्धति तथा माध्यम आदि तकनीको का प्रभाव भारतीय कला पर दिखाई देने लगा। प्राचीन भारतीय परंपराओं का स्थान यूरोपीय शैलियों तथा तकनीको ने ले लिया। सन 1600 ईस्वी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की भारत में स्थापना के बाद ब्रिटेन की बढ़ती शक्ति के कारण यह प्रभाव भी बढ़ना शुरू हुआ विशेष रूप से यह प्रभाव तब और बढा जब पश्चिमी (यूरोपीय) तकनीको का व्यवस्थित प्रशिक्षण देने के लिए यहां के महानगरों मद्रास, कोलकाता, व मुंबई में कला विद्यालयों की स्थापना की गई।

कला विद्यालयों (स्कूल ऑफ आर्ट) की स्थापना का विचार सर्वप्रथम 19वीं शताब्दी के मध्य (लगभग 1850) में परिलक्षित हुआ जब बॉम्बे टाइम्स के संपादक डॉ.जी बुईस्ट ने भारतीय कला शिल्प की शिक्षा देने के लिए "स्कूल ऑफ इंडस्ट्रीज" की स्थापना की। 1850 के दशक के आरंभ में ब्रिटिश शासको ने अनुभव किया कि भारत में कला प्रेमी व कला रसिको को यदि उचित प्रशिक्षण दिया जाए तो वह चित्रकला व मूर्तिकला में प्रवीणता प्राप्त कर सकते हैं यह ऐसे व्यवसाय हैं जिनसे भारत सरलता से विश्व के उत्पादक देशों में अग्रणी स्थान प्राप्त कर लेगा। कला विद्यालयों की स्थापना का प्रयोजन चित्रकला, डिजाइन और मॉडलिंग, अलंकृत मृद्भांड, धातु के पात्र, काष्ठ कला व खराद के कार्य का प्रशिक्षण देना था ऐसे काम जिसमें जटिल मशीनों की जरूरत नहीं होती प्रयोग के तौर पर तीन कला विद्यालय मद्रास, कोलकाता और मुंबई खोले गए। मद्रास (1850) और कोलकाता (1854) के विद्यालयों में कला शिक्षा का पाठ्यक्रम निर्धारित हो गया अपने आरंभिक चरण में मद्रास कला विद्यालय ने उत्पादन केंद्र के रूप में कार्य किया। कोलकाता कला विद्यालय औद्योगिक कला विद्यालय की तर्ज पर शुरू हुआ। इसी प्रकार मुंबई का विद्यालय भी "स्कूल आफ आर्ट एंड इंडस्ट्री" (1857) नाम से शुरू हुआ था और बाद में इसका नामकरण सर० जे०जे० स्कूल आफ आर्ट हुआ। यह तीनों कला विद्यालय मद्रास कोलकाता और मुंबई बाद में लाहौर कला विद्यालय (1875) तथा लखनऊ कला विद्यालय (1913) लगभग एक ही तर्ज पर गैर सरकारी निजी एजेंसियों द्वारा शुरू किए गए थे और बाद में प्रांतीय ब्रिटिश सरकारों के कार्य में चले गए थे।

गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट, चेन्नई (1850ई०)

भारत के इस पहले कला महाविद्यालय की स्थापना 1850 ईस्वी में मद्रास रेजीमेंट के शल्य चिकित्सक डॉ० अलेक्सजेंडर हंटर ने "मद्रास स्कूल आफ आर्ट" नाम से की। 1852 ई० में स्थानीय यूरोपीय शासन ने नाम में संशोधन कर "गवर्नमेंट स्कूल आफ इंडस्ट्रियल आर्ट" नाम से अपने अधीन कर लिया और वर्तमान में चार एकड़ के परिसर में ई०वी० आर० हाई रोड पर पेरियमेंट में स्थानांतरित कर दिया गया। 1884 ईस्वी में ई०वी० हैवेल यहां प्राचार्य बने और 1892 तक अपनी सेवाएं दी उन्होंने भारतीयता के विचार को समकालीन कला आदर्श व प्रतिमान घोषित किया जबकि औपनिवेशिक प्रशासन पश्चात शैली का प्रचार प्रसार करता था। 1929 ईस्वी में प्रसिद्ध मूर्तिकार देवी प्रसाद राय चौधरी इस कला महाविद्यालय के प्राचार्य बने जो कि इस महाविद्यालय के प्रथम भारतीय प्राचार्य बने। देवी प्रसाद राय चौधरी ने यहां के पाठ्यक्रम में पूर्वी कला शैलियों के साथ आधुनिक कला तत्वों का समावेश भी किया उन्होंने परिपेक्ष की परंपरागत तथा प्राचीन कृतियों की अनुकृति के स्थान पर जीवित मॉडल से स्केच तथा चित्रांकन पर जोर दिया। 1957 ईस्वी में के0 शी0 एस0 पणिकर प्राचार्य बने उन्होंने इस कला विद्यालय को एक नई पहचान दिलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1961 ईस्वी में इस महाविद्यालय को "गवर्नमेंट कॉलेज आफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स" नाम दिया गया। वर्तमान में यह "गवर्नमेंट कॉलेज आफ फाइन आर्ट्स" के नाम से जाना जाता है। यह कला महाविद्यालय मद्रास विश्वविद्यालय से संबंध है इसमें ललित कला के स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं।

गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट; कोलकाता (1854 ई०)

कोलकाता कला महाविद्यालय भारत के प्राचीन कला महाविद्यालयों में से एक है। इस कला महाविद्यालय की स्थापना 16 अगस्त 1854 ई0 को गरनहटा, चितरपुर (कोलकाता) नामक स्थान पर "इंडस्ट्रियल आर्ट सोसाइटी" नाम से औद्योगिक कला विद्यालय के रूप में हुई। 1864 ईस्वी में इस संस्था का नाम परिवर्तित कर "गवर्नमेंट स्कूल आफ आर्ट" कर दिया गया लॉर्ड नॉर्थ ब्रुक के नेतृत्व में इसका संचालन स्थानीय शासन ने ले लिया। लॉर्ड नॉर्थ ब्रुक ने यहां एक कला दीर्घा की स्थापना भी कार्रवाई। 29 जून 1864 ईस्वी में हेनरी हॉवर लॉक इस संस्था के प्रथम प्राचार्य बने जो कि लंदन से आए थे। हेनरी हॉवर लॉक 1882 ई० तक प्राचार्य के पद पर आसीन रहे। 1896 ईस्वी में ई०वी० हैवेल ने चेन्नई के गवर्नमेंट कॉलेज आफ फाइन आर्ट्स से प्राचार्य के पद से स्थानांतरित होकर यहां आए और प्राचार्य के पद को सुशोभित किया। ई०वी० हैवेल एक अंग्रेजी लेखक, कला इतिहासकार तथा प्रसिद्ध कला समीक्षक थे। ई०वी० हैवेल ने यहां की कला दीर्घा में संग्रहित चित्रों को परिवर्तित किया तत्पश्चात तत्कालीन वायसराय लॉर्ड कर्जन से आज्ञा लेकर पाश्चात्य कलाकृतियों को क्रय करके नेपाल के पीतल के कलात्मक पात्र, अजंता चित्रों की अनुकृतियां तथा मुगल शैली के लघु चित्रों को कला दीर्घा में स्थापित किया। इस कार्य से प्रभावित होकर बंगाल शैली के प्रसिद्ध कलाकार अवनीन्द्र नाथ टैगोर ई०वी० हैवेल के संपर्क में आए ई०वी० हैवेल ने अवनीन्द्र नाथ टैगोर को अपने सहयोगी के रूप में आमंत्रित किया और 1898 ईस्वी में अवनींद्रनाथ टैगोर को उप प्रधानाचार्य के पद पर नियुक्त किया। 1905 ई से 1915 तक वें इस संस्था के प्रधानाचार्य रहे। अवनीन्द्र नाथ टैगोर जापानी दार्शनिक ओकाकुरा के विचारों से प्रभावित होकर भारत के साथ–साथ चीनी तथा जापानी कलाओं के अध्ययन को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर

भारतीय परंपरागत चित्रण पद्धति की शिक्षा देने के लिए पटना शैली के प्रसिद्ध चित्रकार ईश्वरी प्रसाद तथा जयपुर के भित्ति चित्रकारों को आमंत्रित किया। प्रसिद्ध अंग्रेजी कला इतिहासकार, कलाकार, कला समीक्षक, क्यूरेटर और पुरातत्वविद पर्सी ब्राउन ने इस कला महाविद्यालय में 1909 से 27 ई० तक प्राचार्य के पद पर आसीन रहे। उन्होंने यहां पुनः रॉयल अकाडमी आफ आर्ट लंदन के पाठ्यक्रम को समाविष्ट कर दिया। 1951 में यह स्कूल पूर्णता डिग्री कॉलेज में परिवर्तित कर दिया गया और "गवर्नमेंट कॉलेज आफ आर्ट एंड क्राफ्ट" नाम से जाना जाने लगा। आधुनिक भारतीय कला के प्रसिद्ध कलाकार नंदलाल बोस, शैलेंद्र नाथ दे, असित कुमार हलदर, क्षितींद्रनाथ मजूमदार, के वेंकटप्पा, देवी प्रसाद राय चौधरी, मुकुल चंद्र दे, सुरेंद्रनाथ कर, चिंतामणिकर, आदि ने अपनी कला की शिक्षा यहीं से प्राप्त की।

सर. जे.जे. स्कूल आफ आर्ट मुंबई (1857 ई०)

सर जे०जे० स्कूल आफ आर्ट मुंबई की स्थापना 1857 ईस्वी में हुई। इस कला संस्थान की पहली कक्षा 12 मार्च 1857 को एल्फिंस्टोन इंस्टीट्यूट आफ आर्ट एंड इंडस्ट्री, फोर्ट में प्रारंभ हुई। "सर जे०जे० स्कूल आफ आर्ट" मुंबई का प्रसिद्ध कला विद्यालय है; इस कला विद्यालय का नाम एक पारसी, भारतीय समाजसेवी और व्यापारी जमशेदजी जीजेभाई भाई के नाम पर रखा गया था। उन्होंने इस कला संस्थान को प्रारंभ करने हेतु एक लाख की सहायता राशि प्रदान की थी। इस कला विद्यालय में शिक्षण कार्य हेतु शिक्षक विदेश (लंदन) से बुलाए जाते थे। 1865 ईस्वी में प्रसिद्ध कलाकार जान ग्रिफिथ इस कला विद्यालय के प्रथम प्राचार्य बने। वे यहां रहते हुए 1872 से 1891 के मध्य अजंता भित्ति चित्रों की प्रतिलिपियाँ भी बनवाई। 1866 ईस्वी में जे.जे. स्कूल आफ आर्ट का संचालन तत्कालीन शासन ने अपने अधीन कर लिया तथा लाकवुड किपलिंग को वास्तु–मूर्तिकला का शिक्षक नियुक्त किया। किपलिंग ने इस कला संस्थान में सजावटी चित्रण (डेकोरेटिव पेंटिंग) मॉडलिंग; आर्नामेंट रॉंट आयरन वर्क के लिए तीन कार्यशालाएं स्थापित की। 1878 ईस्वी में यह कला विद्यालय प्रसिद्ध वास्तुकार जॉर्ज ंत्विगे मोलेशी द्वारा गोथिक शैली में नवनिर्मित भवन में स्थानांतरित हो गया तथा 1879 ईस्वी में चित्रकला विषय अपने संपूर्ण पाठ्यक्रम के साथ संचालित होने लगा। 1891 ईस्वी में मुंबई के तत्कालीन गवर्नर ग्यारहवे लॉर्ड रेय ने यहां एक कार्यशाला का निर्माण कराया जिसे "आर्ट एंड क्राफ्ट" विभाग के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार सर जे०जे० स्कूल आफ आर्ट में एक ही छत के नीचे पांच पृथक विभाग (ड्राइंग एंड पेंटिंग; स्कल्पचर एण्ड मॉडलिंग; आर्किटेक्चर आर्ट; आर्ट एंड क्राफ्ट तथा अप्लाइड आर्ट) संचालित होने लगे। सर जेजे स्कूल आफ आर्ट के विकास में जान ग्रिफिथ्स; चार्ल्स एफ जिरार्ड; जॉन बेग; जॉर्ज विटेट; क्लॉद वेटली; लॉक वुड किपलिंग पेस्टोनजी बोमानजी; ग्लेडस्टोन सोलोमन; एम.एफ. पीठावाला; एम. वी. धुरंधर जे.एम. अहिवासी आज सुप्रसिद्ध कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। स्वतंत्रता के बाद 1958 ईस्वी में जेजे स्कूल आफ आर्ट के वास्तुकला विभाग तथा अप्लाइड आर्ट विभाग को परिसर में ही अलग–अलग स्वतंत्र कॉलेज के रूप में स्थापित कर दिया गया जिन्हें वर्तमान में "सर जे.जे. कॉलेज आफ आर्किटेक्चर" तथा "सर जेजे इंस्टीट्यूट आफ अप्लाइड आट" के नाम से जाना जाता है। 1981 ईस्वी में यह कला विद्यालय मुंबई विश्वविद्यालय से संबंध हो गया। सर जे.जे. स्कूल आफ आर्ट के पूर्व छात्रों में अकबर पदमसी (चित्रकार); अमोल पालेकर (अभिनेता); अतुल दोंदिया (कलाकार) बीवी दोषी (वास्तुकार); दादासाहब फाल्के (फिल्म

निर्देशक) एस.एच रजा (चित्रकार); जतिनदास (चित्रकार) जितीश कल्लात (चित्रकार); के के हैब्बर (चित्रकार) लक्ष्मण पै (चित्रकार) एम एफ हुसैन (चित्रकार); राम. वी सुतार (मूर्तिकार); तैयब मेहता (चित्रकार); वीएस गायतोंडे (चित्रकार) चित्रकार आदि प्रसिद्ध नाम है।

राजस्थान स्कूल आफ आर्ट जयपुर (1857ई0)

इस कला विद्यालय को जयपुर के महाराजा सवाई राम सिंह द्वितीय ने 1857 ईस्वी में मदरसा–ए– हुनरी नामक कला विद्यालय को सिटी पैलेस के बादल महल में स्थापित किया। इस कला विद्यालय के प्रथम प्रचार्य वैलेंटाइन कैमरन प्रिंसेप नियुक्त हुए और इस कला शिक्षा केंद्र को बादल महल से पंडित शिवद्दीन जी की हवेली में स्थानांतरित कर दिया गया। 1866 ईस्वी में इसका नाम "जयपुर स्कूल आफ आर्ट" कर दिया गया तथा 1886 ईस्वी में यह कला विद्यालय "महाराजा स्कूल आफ आटर्स एंड क्राफ्टस" नाम से भी जाना जाता था। 1848 ईस्वी में इस भवन में अनेक सरकारी विभाग के कार्यालय भी बन गए थे। 1864 इस्वी में कला डिप्लोमा को मान्यता मिलने के पश्चात् प्रशिक्षित कला अध्यापकों की नियुक्तियां सरकारी स्तर पर होने लगी और 1966 ईस्वी में इसे पुनः किशनपोल बाजार स्थित पुराने भवन में पूर्ण रूप से स्थानांतरित कर दिया गया और यह "राजस्थान स्कूल आफ आर्ट" के नाम से जाना जाने लगा। इस कला संस्थान को असित कुमार हलदर; शैलेंद्र नाथ दे तथा कुशल कुमार मुखर्जी टी.पी. मित्र आदि बंगाली कलाकारों ने प्राचार्य; उपप्राचार्य व आचार्य के पदों पर रहते हुए गौरवांन्वित किया।

वर्ष 2014 में इसे वर्तमान भवन (डॉ राधाकृष्णन शिक्षा संकुल जयपुर ब्लॉक 9) में स्थानांतरित कर दिया गया। वर्तमान में इस कला विद्यालय में चित्रकला; मूर्तिकला तथा व्यावसायिक कला में 4 वर्षीय बी.वी.ए तथा एम.वी.ए. कोर्स संचालित किए जाते हैं।

नेशनल कॉलेज ऑफ आर्ट्स लाहौर (1875ई०)

इस कला विद्यालय को आलंकारिक तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण देने हेतु 1875 ईस्वी में तत्कालीन गवर्नर लॉर्ड मेयो के सम्मान में "द मेयो स्कूल आफ इंडस्ट्रियल आर्टस" नाम से स्थापित किया गया जो वर्तमान पाकिस्तान का प्राचीनतम कला संस्थान है। जान लाकवुड किपलिंग इस संस्थान के प्रथम प्राचार्य बने थे। इस कला महाविद्यालय में काष्ठ शिल्प; वास्तु शिल्प; धातु ढलाई तथा अभियांत्रिकी आदि पाठ्यक्रम संचालित थे। किपलिंग के पश्चात डब्ल्यू.एफ. एच. इंद्रे, पर्सी ब्राउन, भाई रामसिंह, समरेंद्रनाथ गुप्त, बी.सी. सान्याल उल्लेखनीय प्राचार्य रहे। बी.सी. सान्याल ने यहां से 1936 ईस्वी में त्यागपत्र देने के पश्चात "लाहौर स्कूल आफ फाइन आर्ट" नामक स्वतंत्र कार्यशाला स्थापित की जिसे **सान्याल स्टूडियो** के नाम से जाना गया। 1958 ईस्वी में इस कला स्कूल को उन्नत कर "नेशनल कॉलेज आफ आर्ट्स" नाम में परिवर्तित कर दिया गया और 1960 ईस्वी में इस औद्योगिक विभाग से स्थानांतरित कर शिक्षा विभाग से मान्यता दे दी गई। अब यह हायर एजुकेशन कमिश्नर से संबंध है। यहां आर्किटेक्चर; फाइन आर्ट्स कम्युनिकेशन डिजाइन सेरेमिक प्रोडक्ट डिजाइन टेक्सटाइल म्यूजियोलॉजी फिल्म व

टेलीविजन मल्टीमीडिया इंटीरियर डिजाइन के स्नातक व स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रमों के साथ डिप्लोमा 6 महीने के शार्ट कोर्स भी संचालित हैं। यहां से धनराज भगत, अमरनाथ सहगल, कृष्णा खन्ना आदि ने अपने कला जीवन की शुरुआत की थी। वर्तमान में इस कला महाविद्यालय को पूर्णतः स्नातकोत्तर ललित कला महाविद्यालय का रूप दे दिया गया है जिसे आज नेशनल कॉलेज आफ आर्ट लाहौर के नाम से जाना जाता है।

कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट; लखनऊ (1911ई0)

इस कला विद्यालय की स्थापना तत्कालीन ब्रिटिश सरकार द्वारा 1892 ईस्वी में व्यावसायिक प्रशिक्षण हेतु स्कूल आफ इंडस्ट्रियल डिजाइन नाम से विंग फील्ड मंजिल में की गई थी 1909 ईस्वी में इस संस्था के लिए स्थाई भवन का निर्माण प्रारंभ हुआ तथा बाद में या मनकामेश्वर मंदिर रोड पर स्थानांतरित कर दिया गया। 1917 ईस्वी में इसे "गवर्नमेंट कॉलेज स्कूल आफ आर्ट्स एंड क्राफ्टस" के रूप में पुनः नामित किया गया। इसके प्रथम प्राचार्य नेथेनियल हर्ट थे जिन्होंने यहां विशेष रूप से यूरोपीय एकेडमिक यथार्थवादी कला शैली पर बल देते हुए साउथ केसिंगटन आर्ट एजुकेशन सिस्टम के अनुसार पाठ्यक्रम निर्धारित किया। 1925 ईस्वी में असित कुमार हलदर यहां प्राचार्य नियुक्त हुए असित कुमार हलदर तथा उनके समकालीन ललित मोहन सेन तथा वीरेश्वर सेन तीनों ने अपने अध्यापन काल में अनेक वर्षों तक लखनऊ कला परिदृश्य तथा कलाकारों को प्रभावित किया।

1968 ईस्वी में चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट प्राचार्य नियुक्त हुए तथा 1973 ईस्वी में गवर्नमेंट कॉलेज आफ आर्ट एंड क्राफ्ट को लखनऊ विश्वविद्यालय में विलीन कर दिया गया। वह ललित कला डिप्लोमा स्नातक व स्नातकोत्तर डिग्री प्रयोगात्मक शिक्षा पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त कला इतिहास तथा आलोचना जैसे विषयों को भी डिग्री स्तर पर सम्मिलित किया गया। यहां के प्रमुख कलाकारों में जे.एम. आहिवासी; असित कुमार हलदर; ललित मोहन सेन; वीरेश्वर सेन; श्री राम वैश्य; सुधीर खस्तगीर; श्रीधर महापात्रा; हरिहर लाल मेढ; विश्वनाथ मुखर्जी तथा रणवीर सिंह बिष्ट आदि इस कला विद्यालय के प्रमुख कलाकारों में हैं।

इसी प्रकार अन्य उल्लेखनीय कला महाविद्यालय में कॉलेज आफ फाइन आर्ट तिरुवंतपुरम केरल (1888), गवर्नमेंट कॉलेज आफ फाइन आर्ट केरल,(1888ईस्वी), वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान (1937), कॉलेज आफ आर्ट नई दिल्ली (1942), फैकेल्टी आफ फाइन आर्ट एम०एस० विश्वविद्यालय वडोदरा (1950),गवर्मेन्ट फाइन आर्ट कॉलेज, इंदौर(1927),गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट, चंडीगढ़ (1951), आदि उल्लेखनीय कला महाविद्यालय हैं जिन्होंने कला के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सन्दर्भ–सूची

1. चतुर्वेदी डॉ. ममता; समकालीन भारतीय कला; राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी संस्करण (2022)

2. मांगो नाथ प्राण, भारत की समकालीन कला (एक परिप्रेक्ष्य) नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

3. विकिपीडिया

4. जोशी डॉ. ज्योतिष, आधुनिक कला आन्दोलन

5. अग्रवाल किशोर डॉ गिरिराज, आधुनिक भारतीय चित्रकला, संजय पब्लिकेशन

6. भरद्वाज विनोद, वृहद् आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली